फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज़ नम्बर 151 जनवरी 2001

रात को व्हर्लपूल अपनी शुद्धि करती है और रिजेक्शन के प्लास्टिक-पेन्ट-रसायन थोक में फैक्ट्री के सामने जलवा कर होलसेल प्रदूषण फैलाती है।

तेरी-मेरी बातें और हाथों से बोलना

अपनी परेशानियों-दिक्कतों-बदहाली के बारे में सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों तक से बात करने में डर लगता है। अपनी तकलीफ किसी को बताने पर खिल्ली उड़ाये जाने, हेय दृष्टि से देखे जाने, बेचारगी को भुना कर तकलीफ बढा देंगे के खतरे प्रचलित माहौल में दिखते हैं। गरीबी, कमजोरी, गलती के मजाक उड़ाने के आचार - विचार हावी हैं। इस उल्टी नैतिकता के दबदबे में हम अपने में सिकुड़ते जाते हैं और हमारी तकलीफें बढती जाती हैं।

वर्तमान व्यवस्था ऐसी है कि इसमें व्यक्ति गौण- दर- गौण होती जा रही है। वर्तमान में व्यक्ति का होना- न होना बेमानी होता जा रहा है। यह वर्तमान का असर है, मनुष्य की इस दुर्गत की अभिव्यक्ति है कि हमारी काफी चर्चायें मेरी- मेरी, तेरी- तेरी के दायरे- अखाड़े में होती हैं : मैं यह और तू वह; मेरे पिता ऐसे और तेरी बेटी वैसी; मेरे रिश्तेदार यह और तेरे मित्र वह; मेरी कम्पनी ऐसी और तेरी बस्ती वैसी; मेरी हीरोइन यह और तेरी पार्टी वह; मेरी जाति ऐसी और तेरा क्षेत्र वैसा; मेरा धर्म यह और तेरा देश वह;..... आमतौर पर स्वयं को इक्कीस और दूसरे को उन्नीस दिखाने के लिये मैं- मेरे द्वारा ओढी- ओढाई- अपनाई हर चीज में गुण ही गुण दिखाये जाते हैं तथा दूसरे से जुड़ी- जोड़ी बातों में अवगुणों के भण्डार उजागर किये जाते हैं। वैसे, छाती पीटने के वक्त प्रत्येक मैं- मेरी में अवगुण ही अवगुण तथा दूसरे से जुड़ी- जोड़ी बातों में गुण ही गुण देखे- दिखाये जाते हैं। जो हो, खुली अथवा लुकी- छिपी लाचारी सार है तथा कटुता- कड़ुवाहट मेरी- मेरी, तेरी- तेरी बातों का चरित्र है। पहले ही जो दुर्गत है उसे ऐसी चर्चायें और बढाने का काम करती हैं।

सामान्य तौर पर तमाम चर्चायें होती हैं। इनमें तेरी- मेरी वाली बातें भी होती हैं जो कि हमें महत्वपूर्ण लगती हैं।

तेरी-मेरी मानी हमारी

वर्तमान के दबदबे के बावजूद यह तथ्य है कि एक- दूसरे के प्रति हमदर्दी, एक- दूसरे के सुख- दुख बाँटना, एक- दूसरे की सहायता करना बहुत व्यापक हैं। अनगिनत प्रकार की हैं और अनन्त हैं प्रेम- आदर- परस्पर सहायता की हमारी क्रियायें। तेरी- मेरी बातें सहज मानवीय प्रक्रिया का अंग लगती हैं।

यह सच है कि अनादि काल से चले आ रहे, पवित्र- सद्कर्म के धार्मिक लिबास में लिपटे हमारे मानवीय आचार- विचार सिकुड़ते नजर आ रहे हैं। लेकिन यह तथ्य अधिक महत्वपूर्ण है कि वर्तमान की वीभत्स बेदर्दी के सम्मुख तेरी- मेरी बातें तेरे- मेरे दुख- दर्द को बाँटने के लिये सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना क्रिया- क्षेत्र बना रही हैं। स्नेह- सम्मान- परस्पर सहायता के आधार पर उभर रही हमारी बातें, हमारे तालमेल पूरे संसार में होड़- तौहीन आधारित वर्तमान के लिये चुनौती बनने को अग्रसर हैं।

ल्हास-ल्हासिये

मिलजुल कर मदद करने को ल्हास कहते थे। पन्द्रह- बीस ल्हासिये जुट जाते और चटपट कार्य सम्पन्न कर देते। ल्हास के आरम्भ का पता नहीं पर पंजाब- हरियाणा के गाँवों में 40 वर्ष पूर्व भी ल्हास- ल्हासियों के दर्शन हो जाते थे।

रुपये- पैसे की आवश्यकता जितनी ज्यादा घटायेंगे उतनी ही अपने लिये जगह बढायेंगे। रुपयों- पैसों की जरूरत को कम करने का एक सहज तरीका है एक- दूसरे की सहायता करना। हमारे तालमेल रुपये- पैसे के लिये स्थान को सिकोड़ते हैं और तेरे लिये, मेरे लिये, हमारे लिये स्थान को बढाते हैं।

पता नहीं जातिगत दमन- शोषण पर ल्हास सवाल उठाती थी या नहीं। फिर भी, परस्पर सहायता द्वारा रुपये- पैसों के लिये जगह सिकोड़ने वाली ल्हास और ल्हासिये हमारे लिये प्रेरणा- स्रोत हैं।

वर्तमान ने चर्चाओं के लिये समय और स्थान बहुत- ही सिकोड़ दिये हैं फिर भी हर कोई समय- स्थान के जुगाड़ कर अपने- अपने तरीके से बोलती- बोलता है। कम्पनी में आते- जाते वक्त बातें होती हैं। लन्च के टाइम, चाय के समय, पानी- पेशाब के वक्त बातें होती हैं। काम करते- करते भी आपस में बातें होती हैं। शिफ्ट समाप्त होने से पहले दस- बीस मिनट बातचीत के लिये निकाल ही लेते हैं। फैक्ट्री में उस समय जो समस्या होती है उस पर बात तो करते ही हैं — ज्यादातर बातें उसी की करते हैं और उस चर्चा में विभिन्न विचार आते हैं। कई बार माहौल ऐसा होता है कि डायरेक्ट कोई नहीं पूछता कि क्या हो रहा है बल्कि इसकी जड़ में यह- वह डाल कर चर्चा के दौरान बात पर आते हैं। घर- मोहल्ले में बातें, सब्जी लेने जाते समय बातें। सामान्य तौर पर तमाम चर्चायें होती हैं। फिर भी, कई मजदूरों से सुनने में आता है :

"मजदूर कुछ बोल ही नहीं रहे"

माना कि मेरी- मेरी, तेरी- तेरी के दायरे वाली इक्कीस दिखने अथवा अत्यन्त हीन बनने वाली हमारी बातें हमारे लिये हानिकारक हैं। चुगली तो नुकसानदायक होती ही है। लेकिन तेरी- मेरी बातें, हमारी बातें, एक- दूसरे से सहयोग और आपसी तालमेल वाली बातें भी तो होती हैं। जाहिर है, जब यह कहा जाता है कि "मजदूर कुछ बोल ही नहीं रहे" तब कुछ और ही कहा जा रहा होता है।

" वरकर कुछ बोल ही नहीं रहे " का मतलब होता है : जो समस्या होती है उसका समाधान नहीं निकल रहा। जल्से- जलूस- भाषणबाजी नहीं हो रही। मैनेजमेन्ट को, दल्लों- लीडरों को मुँह पर कोई बोल नहीं रही- रहा। " कोई वीर होता जो खूँटा गाड़ देता" की इच्छा की पूर्ति नहीं हो रही।

उँगली पर गोवर्धन

दरअसल हम सब वर्तमान से बखूबी परिचित हैं। प्रत्येक जानती- जानता है कि आज वह अत्यन्त गौण है। हकीकत की इस सही पहचान से हम क्या निष्कर्ष निकालते हैं ? खुद की तुच्छता हमें कई बार अवतार में, मसीहा में, महामानव में तारणहार ढूँढने को प्रेरित करती है। हम पूजा- अर्चना करते हैं, रोजे रखते हैं, सत्संग में जाते हैं, प्रवचन सुनते हैं, दादा- नेता- वकील के आगे- पीछे दौड़ते हैं। असली अवतार, सच्चे

(बाकी पेज चार पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

ओखला से.....

सिमको बिड़ला कर्मचारी : "हम करीब 160 कर्मचारी सिमको बिड़ला लिमिटेड, डी–180/सी- 159 ओखला इन्डस्ट्रीयल एरिया फेज 1 में कार्यरत हैं। कम्पनी का चेयरमैन सिद्धार्थ बिड़ला है। दिनांक 8.12.2000 को जब हम सुबह आफिस पहुँचे तो मेन गेट पर नोटिस लगा हुआ था कि 110 कर्मचारी कम्पनी में आ कर ड्युटी नहीं कर सकते। 110 कर्मचारियों को बिना कोई कारण ड्युटी से हटा दिया गया। हम सभी कर्मचारियों को 2 माह से वेतन भी नहीं दिया है। कम्पनी हमें तरह- तरह से परेशान कर रही है। यहाँ कोई बात करने भी नहीं आ रहा। हमारी 5 से 20 साल की सर्विस है। कम्पनी ने हमारी ग्रेच्युटी, छुट्टी के पैसों व प्रोविडेन्ट फण्ड पर भी रोक लगा रखी है। हम सभी यहाँ पर किराये पर रहते हैं। हमारी जीविका वेतन पर ही निर्भर है।"

लुधियाना से .....

नितेश फोरजिंग मजदूर : "लुधियाना न्यू जनता नगर स्थित नितेश फोरजिंग में हम 25 श्रमिक काम करते हैं। तनखा 800 से 1500 तक। पक्के रजिस्टर पर नाम किसी का भी नहीं। एक दिन गाँव से हम श्रमिकों के तीन पत्र आये। साहब ने फाड़ कर फेंक दिये। दूसरे दिन फटे हुये लैटर कुड़ेदान से मिलने पर हम लोगों को मालूम हो गया। पूछने पर साहब ने कहा कि दूँ या नहीं दूँ मेरी मर्जी। चाय भी ठीक से पीने नहीं दी जाती – मशीन पर खड़े- खड़े पीनी पड़ती है। साहब अपने चमचों के बताये अनुसार रहता है और किसी-न- किसी वरकर को गालियाँ देते रहता है। वरकर को थप्पड़ मार देना उसकी एक आदत बन चुकी है। रोजाना वरकर बदले जाते हैं। स्वतन्त्रता दिवस मनाते और मानते हैं – यह कैसी आजादी है ?"

अंग-भंग ई.एस.आई.

सुपर आटो मजदूर : "मैं, रामबीर, सुपर आटो (इण्डिया) लिमिटेड, प्लॉट 84 सैक्टर- 6 में पावर प्रेस आपरेटर था। 21.10.2000 को मेरा हाथ मशीन में फँस गया और दाँया अँगूठा कट गया। मैनेजमेन्ट ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी और इलाज के लिये मुझे ई.एस.आई. अस्पताल नहीं ले गई। अन्य वरकरों की तरह मेरा नाम भी कम्पनी ने ई.एस.आई. में दर्ज नहीं कराया था। मैनेजमेन्ट ने मेरा प्रायवेट इलाज करवाया और मुझे परमानेन्ट करने का आश्वासन दिया। इलाज के बाद कुछ दिन मुझे ड्युटी पर रखा और अब 16.12.2000 को मैनेजमेन्ट ने मुझे नौकरी से निकाल दिया है।"

नीलकंठ मशीनरी वरकर : "प्लॉट 44 सैक्टर- 4 में मैं, कमल सिंह, काम करता था। डाई गिरने से 11.5.2000 को मेरा पैर कट और टूट गया। वधवा नर्सिंग होम में 15 टाँके लगे और प्लास्टर चढ़ा। मैंने 19.5.2000 को ई.एस.आई. अधिकारियों को शिकायत की तब 24 मई को उन्होंने कार्ड बनाया और मैनेजमेन्ट ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भर कर भेजी। इसके बाद ई.एस.आई. में मेरा इलाज हुआ। किये काम का वेतन मुझे तब मिला जब मैंने श्रम विभाग में शिकायत की और ओवर टाइम के पैसे मुझे अभी तक मैनेजमेन्ट ने नहीं दिये हैं। ई.एस. आई. द्वारा भरे जाते मेडिकल छुट्टियों के फार्म मैनेजमेन्ट ने लेने से मना कर दिया – रजिस्टर्ड पत्र भी नहीं लिया, लौटा दिया। इलाज पूरा होने पर 5.8.2000 को ई.एस.आई. डॉक्टर ने मुझे मेडिकल फिटनेस सर्टीफिकेट दिया। मैनेजमेन्ट ने फिटनेस सर्टीफिकेट लेने से मना कर दिया और मुझे ड्युटी पर नहीं लिया। मैंने ई.एस.आई. में शिकायत की, श्रम विभाग में शिकायतें की और फिर डी.सी. को शिकायत की लेकिन अभी तक मुझे नौकरी पर नहीं लिया गया है।"

अनुभव-दर-अनुभव

कॉन्टिनेन्टल प्रोफाइल्स मजदूर : "हम 85 परमानेन्ट थे, अब 9 ही बचे हैं – यूनियन ने हमारा कबाड़ा किया। मैनेजमेन्ट ने ले- ऑफ पर ले- ऑफ की और ले- ऑफ के पैसे देने बन्द कर नौकरी छोड़ने को मजबूर किया। जिन 5 पुरानों को नये सिरे से रखा है उन्हें मैनेजमेन्ट 12 घण्टे के 90 रुपये देती है और महीने के तीसों दिन काम करवाती है – ई.एस. आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं। यही हाल कैजुअलों का है और उत्पादन बढाओ, उत्पादन बढाओ की रट लगाये दो साहब सिर पर खड़े रहते हैं।"

सेवा इन्टरनेशनल वरकर : "जनवरी 99 से आज तक जितने नेता आये सब हम लोगों को डुबाते चले गये। आठ नेता अब तक कम्पनी में बने और सब ने यही किया। अब तो हम लोगों को खुद देखना पड़ेगा।"

फ्रिक इण्डिया मजदूर : "कोई न कोई मजबूरी ही होती है कि शरीर को आराम की जरूरत होती है उस उम्र में भी लोगों को नौकरी करनी पड़ती है। **(बाकी पेज चार पर)**

कानून–कानून–कानून .....

इन्जेक्टो मजदूर : "20 दिसम्बर हो गया – अभी तक नवम्बर का वेतन नहीं दिया है।"

आटोपिन वरकर : "नवम्बर की तनखा अभी कहाँ? 20 दिसम्बर को जा कर तो मैनेजमेन्ट ने अक्टूबर की तनखा दी।"

कॉटेक्स डाइंग मजदूर : "28 सैक्टर स्थित फैक्ट्री में हम 250 वरकर हैं। रोज 12 घण्टे ड्युटी करने पर महीने के 1400 रुपये। गाली तो आम भाषा बना रखी है। ई.एस. आई. कार्ड नहीं दिये हैं – किसी मजदूर के हाथ- पाँव में ज्यादा चोट लग जाती है तो उसे निकाल देते हैं।"

ट्रैक्टेल टिरफोर वरकर : "अक्टूबर का वेतन 13 नवम्बर को दिया था और नवम्बर का आज 12 दिसम्बर तक नहीं दिया है। हम अपनी तनखा माँगते हैं तो मैनेजमेन्ट कहती है कि पैसे होंगे तब देगी।"

बिड़ला वी एक्स एल मजदूर : "14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 50 परमानेन्ट और 250 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

अम्बिका इन्डस्ट्रीज वरकर : "हैल्परों को 1150 और ऑपरेटरों को 1600 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड कुछ को ही दिया है – एक्सीडेन्ट होने पर बनवाते हैं।"

अमेटीप मशीन टूल्स मजदूर : "अक्टूबर की तनखा वरकरों को 28 नवम्बर को और स्टाफ को 8 दिसम्बर को जा कर दी। आज 12 दिसम्बर तक नवम्बर की तनखा की तो कोई बात ही नहीं है। सितम्बर व अक्टूबर में करवाये ओवर टाइम के पैसे अब तक नहीं दिये हैं। मैनेजमेन्ट कहती है कि बैंक कर्ज नहीं दे रहे इसलिये पैसे नहीं हैं।"

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "कम्पनी बहुत हेरा- फेरी कर रही है – टिकट लगा कर 2500 रुपये पर हस्ताक्षर करवाती है और देती 1400 रुपये ही है। लिफाफा मैनेजमेन्ट अपने पास ही रख लेती है।"

वी एक्स एल वरकर : "कैजुअलों को 1700 रुपये महीना देने की बात मैनेजमेन्ट करती है। लेकिन इन 1700 में से ही ई.एस.आई. व प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे काट कर मैनेजमेन्ट हमारे हाथ में 1400 रुपये महीना ही देती है।"

अल्फा टोयो मजदूर : "ओवर टाइम की पेमेन्ट डबल रेट से थी पर अब मैनेजमेन्ट ने सिंगल रेट से कर दी है।"

एस.पी.एल. प्रिन्टिंग वरकर : "हम 80 मजदूर हैं। हर रोज 12 घण्टे, महीने के तीसों दिन काम के बदले 2400 रुपये देते हैं। हम में से किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है, फण्ड की पर्ची भी नहीं।"

टू फैब मजदूर : "13/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तनखा 28 तारीख को जा कर देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से ही और फिर भी 9 महीने के ओवर टाइम के पैसे नहीं दिये हैं।"

विक्टोरा टूल्स वरकर : "बरसों से काम कर रहों को मैनेजमेन्ट कैजुअल कहती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं। तनखा मात्र 1400 रुपये।"

नूकेम वरकर : "उत्पादन लगातार जारी है और अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर तथा नवम्बर महीनों की तनखायें मैनेजमेन्ट ने एन.एम.टी.एल. में हमें आज, 8 दिसम्बर तक नहीं दी हैं।" ■

दर्पण-आईना-मिरर

उषा टेलिहोइस्ट मजदूर : "20 जुलाई को तालाबन्दी और 16 अगस्त को तालाबन्दी समाप्त, हड़ताल आरम्भ। जाल में जकड़े पाँच महीनों से मैनेजमेन्ट हमारे पेट पर लात मार रही है और नौकरी छोड़ने के लिये दबाव बढा रही है। हरियाणा सरकार से 100 मजदूरों की छँटनी की अनुमति ले ली पर हाई कोर्ट द्वारा उस पर रोक- स्टे पर मैनेजमेन्ट ने 30 नवम्बर को पुलिस की मदद से 60-70 लोगों को फैक्ट्री में घुसा दिया। कभी-कभार ही वे लोग पुलिस के पहरे में बाहर निकलते हैं। अफसर आजकल-आजकल में फैसला करने की बातें करते हैं लेकिन सरकार में कहीं भी मजदूरों की कोई सुनवाई नहीं है।"

इटालियन इको ब्रेक्स वरकर : "तनखा 1300 रुपये देते थे पर हस्ताक्षर 1915 रुपये पर करवाते थे। लेबर इन्सपैक्टर आता और अपनी मन्थली ले कर चला जाता। हम ने लेबर अफसर से शिकायत की तो प्रबन्धकों ने बिना कोई भी पत्र दिये 30.10.2000 को हम सब मजदूरों को निकाल दिया। श्रम विभाग में मैनेजमेन्ट बोली कि हम उनके मजदूर ही नहीं हैं लेकिन रिकार्ड पेश करने को कहा तो मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री का रिकार्ड दिखाने से मना कर दिया। शाहदरा में बन्द फैक्ट्री के मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने हमारी जगह काम पर लगा दिया है। पुलिस से पिटवा कर मैनेजमेन्ट हमें फैक्ट्री के पास से भगाती रही है और इधर तो मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री गेट पर अलग से भी गुण्डे रख लिये हैं।"

बोनी रबड़ मजदूर : "बहुत गन्दा काम है। परमानेन्टों व कैजुअलों को महीने में एक-एक किलो गुड़ और साबुन देते थे पर मई 99 से कैजुअलों को गुड़-साबुन देने बन्द कर दिये। यूनियन लीडरों से कहा तो वे बोले कि कम्पनी को घाटा हो रहा है। परमानेन्ट 60, कैजुअल 50 और ठेकेदारों के जरिये रखे 30 वरकर हैं — सब मजदूरों की 12 घण्टे ड्युटी है, सुबह 8 से रात साढे आठ बजे तक। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को महीने के तीसों दिन काम की तनखा 1000-1200 रुपये है। दिवाली पर परमानेन्टों को 17 प्रतिशत बोनस दिया पर कैजुअलों को 8.33 ही, और जिन्हें निकाल दिया है उन्हें कल आना, परसों आना कह कर अब तक टरका रहे हैं। कैजुअलों को ई.एस.आई. कार्ड तो देते ही नहीं, निकाल देने के बाद फण्ड फार्म भरने के लिये भी बहुत चक्कर कटवाते हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "फस्ट प्लान्ट में मैनेजमेन्ट ने अक्टूबर में पड़ी चार त्यौहारी छुट्टियों के पैसे हम कैजुअल वरकरों की तनखा में से काट लिये जबकि फार्मट्रैक में कैजुअलों को यह पैसे दिये हैं। फस्ट प्लान्ट में परमानेन्टों का साइकिल स्टैन्ड फैक्ट्री के अन्दर बनाया है पर कैजुअलों का फैक्ट्री से बाहर, प्रवेश द्वार से आधी मील दूर बनाया है। कैजुअलों से मैनेजमेन्ट मशीनें चलवाती है लेकिन वेतन हैल्पर ग्रेड का देती है। आई.टी.आई. किये कैजुअलों की एस्कोर्ट्स जे सी बी तथा एस्कोर्ट्स यामाहा में 105 रुपये दिहाड़ी है लेकिन एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में 79 रुपये ही।"

अनु प्रोडक्ट्स वरकर : "फसलों पर छिड़कने वाली कीटनाशक दवायें बनती हैं। पाउडर उड़ता है — साँस लेने में बहुत परेशानी होती है। हाथ खराब हो जाते हैं। इतना खतरनाक काम है कि कानून इस फैक्ट्री के आस-पास बस्ती बसने पर रोक का है। मजदूर बहुत जल्दी बीमार हो जाते हैं। फैक्ट्री में 50-60 का काम है और सब्जी मण्डी में आलू-गोभी की तरह इस फैक्ट्री में मजदूरों की आमद-निकासी होती है।"

पद्मिनी इंजिनियरिंग मजदूर : "दिल्ली में सरिता विहार से गुड़गाँव के पास नई फैक्ट्री में जाने को कह रहे हैं। कैजुअलों को तो वैसे ही निकाल दिया और कुछ महिला मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी। सौ के करीब बचे हम परमानेन्टों को मैनेजमेन्ट कह रही है कि नई जगह हरियाणा ग्रेड देगी। यानि, आने-जाने में 4 घण्टे ज्यादा लगाओ व अतिरिक्त परेशानियाँ उठाओ और वेतन में 500 रुपये की कटौती करवाओ! (दिल्ली में सरकारी न्यूनतम वेतन 2419 रुपये है, हरियाणा में 1915 रुपये)।"

गुडईयर मजदूर : "तीसरी बार मैनेजमेन्ट द्वारा लगाई गई वी.आर.एस. कहने को ही वी.आर.एस. है, वास्तव में यह सी.आर.एस. है। हर विभाग में अलग-अलग नोटिस लगा कर मैनेजमेन्ट ने वहाँ 'फालतू' मजदूरों की संख्या लिखी है। मैनेजरों ने अरजेन्ट मचा रखी है और मजदूरों को बुला-बुला कर नौकरी छुड़वाने की कसरत कर रहे हैं।" ■

संवाद

कम्पनी वाइन्ड-अप करने, समाप्त कर देने के बी.आई.एफ.आर. के आदेश के खिलाफ मैनेजमेन्ट द्वारा ए.ए.आई.एफ.आर. में अपील की सुनवाई के लिये अर्जी पर बहस के बाद — झालानी टूल्स मजदूर ने मैनेजमेन्ट के वकील से पूछा : "आपने कम्पनी की सेवा कितने दिन की है?"

मैनेजमेन्ट का वकील : "आपको इससे क्या मतलब है?"

झालानी टूल्स मजदूर : "मैंने कम्पनी में 30 साल नौकरी की है और मुझे मैनेजमेन्ट एक पैसा नहीं दे रही है जबकि आपको दो घण्टे की सेवा के लिये साढे पाँच लाख रुपये दे रही है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

बन्द कमरों की शतरंज

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फरीदाबाद से सूरजपुर ट्रान्सफर किये वरकरों से एस्कोर्ट्स यामाहा मैनेजमेन्ट काम तो सूरजपुर में ले रही है पर पैसे फरीदाबाद प्लान्ट के हिसाब से दे रही थी। मैनेजमेन्ट की इस हेरा-फेरी के खिलाफ हम ने बहुत खींच-तान की और अब आखिरकार 31 दिसम्बर को मैनेजमेन्ट को 35 लाख रुपये फरीदाबाद से ट्रान्सफर किये मजदूरों को पीछे का हिसाब बराबर करने के देने पड़े हैं। यह खुशखबरी है पर माहौल तो बहुत मनहूस नजर आ रहा है। एग्रीमेन्ट वाली वर्क लोड में भारी वृद्धि और असेम्बली लाइन की लम्बाई बढा कर मैनेजमेन्ट ने फरीदाबाद में दो शिफ्टों में 600 मोटरसाइकिल प्रतिदिन का प्रबन्ध कर लिया है लेकिन महीनों से दोनों शिफ्टों के वरकरों को एक ही शिफ्ट में बुला रही है और 250 मोटरसाइकिल ही रोज बनवा रही है। वी.आर.एस. के सिलसिले में 107 दिन वाले हिसाब के बाद सितम्बर में नये रंग-रोगन वाली वी.आर.एस. भी मैनेजमेन्ट ने लगाई लेकिन अब भी राजदूत प्लान्ट में 1900 परमानेन्ट मजदूर हैं और मैनेजमेन्ट की चली तो 1200 ही रखेगी। यह नई उठा-पटक 700 की छँटनी की चाल हो सकती है।

"2000 की ही तरह 2001 की शुरूआत भी पहली जनवरी के आधे दिन का वेतन काटने के मैनेजमेन्ट के नोटिस से शुरू हुई है। स्टाफ को ही नहीं बल्कि फार्मट्रैक प्लान्ट में हम मजदूरों को भी तनखा मिल गई है — दिसम्बर की पे-स्लिप देखिये, वेतन में से मैनेजमेन्ट ने 1400 रुपये काट लिये हैं। एग्रीमेन्ट ने फार्मट्रैक में ट्रैक्टरों का उत्पादन 72 से बढा कर 104 प्रतिदिन कर दिया है लेकिन पूरे साल ज्यादातर समय 30-40-50-60 ट्रैक्टर ही प्रतिदिन मैनेजमेन्ट ने बनवाये हैं। पार्ट्स हम से 104 के बनवाती रही है पर असेम्बली में अधिकतर समय एक शिफ्ट ही चला कर मैनेजमेन्ट ने फार्मट्रैक में औसतन 50 ट्रैक्टर ही प्रतिदिन बनवाये होंगे।

"फस्ट प्लान्ट में शॉकर डिविजन में आजकल काम बहुत है पर लफड़े को देखते हुये हमें सुपरवाइजरों की बातें याद आ रही हैं। वे कहते थे कि मैनेजमेन्ट को हम 400 में से 200 ही चाहियें।

"एग्रीमेन्ट के दौरान की धोखाधड़ी ने बहुत चौकस कर दिया है। गालियाँ हम अब भी उस प्रधान को देते हैं लेकिन काम तो मैनेजमेन्ट का हुआ था। एग्रीमेन्ट के जरिये वर्क लोड में तो भारी वृद्धि मैनेजमेन्ट ने कर दी लेकिन वी.आर.एसों. के बावजूद छँटनी की उसकी योजना को हम ने अटका दिया। लगता है कि मैनेजमेन्ट ने फिर कड़वी खिचड़ी पकाई है। पैसे काटने-हड़ताल से काम मैनेजमेन्ट का हो और गालियाँ कोई खाये वाला लफड़ा रिपीट हो सकता है।" ■

तेरी-मेरी बातें और हाथों से बोलना ..... (पेज एक का शेष)

पैगम्बर, सतगुरू, असल खूँटा गाड़ने वाले का इन्तजार हमारी बढती दुर्गत पर रोक नहीं लिये है। मसीहा की खोज के हमारे अनुभव क्या कहते हैं? कहीं हम गँगा के उल्टी बहने का इन्तजार तो नहीं कर रहे?

एक तरीका यह भी हो सकता है : हम में से प्रत्येक आसानी से एक-एक कँकड़ उठा सकती-सकता है। अपनी-अपनी सहुलियत अनुसार और अपने-अपने ढँग से हर एक की क्रियाशीलता व रचनात्मकता लगातार जारी रह सकती है। हम गौण-क्षुद्र-तुच्छ लोग आपसी तालमेलों द्वारा शीघ्र ही हिमालय को उठा सकते हैं — गोवर्धन तो एक छोटा-सा पर्वत है।

- अफसर व लीडर की अगाड़ी और पिछाड़ी, दोनों खतरनाक हैं।
- मैनेजमेन्ट से- सरकार से- सिरों पर बैठों से निपटने का एक तरीका है : मुँह से हाँ जी और हाथों से नाँ जी।
- जीभ का तो बत्तीस दाँतों से ही पाला पड़ता है जबकि हमें बत्तीस हजार अस्त्र- शस्त्र- शास्त्र घेरे रहते हैं।

बोलने में डर लगता है। बोलेंगे तो निकाल देंगे। बोलने का मतलब मुँह पर बोलना, सामने बोलना। सामने कोई क्यों आये? मुँह पर कोई क्यों बोले?

बन्द मुँह से बोलना

बन्द मुँह से बोलने के हजारों तरीके हैं। हाथों से बोलना इनमें एक है और हाथों से बोलने के भी सैंकड़ों ढँग हैं। फैक्ट्रियों में हजारों नट- बोल्ट, हजारों तार, नाली- सीवर, रात- दिन को लपेटे शिफ्टें हमारे हाथों को बोलने के लिये प्रभावशाली मैदान उपलब्ध करवाते हैं। अनेकों हैं हमारे लिये बाँये हाथ के खेल। हमारे हाथों की बोली मैनेजमेन्टों के कानों में नहीं बल्कि माथों में गूँजती है और साहबों के पागलपन पर ब्रेक का काम करती है।

और, मुँह से बोलना

चाणक्य की कुटिलता आज सिर- माथों पर बैठों के सिधान्तकारों के सामने शिशु समान चालाकी है। तो क्या? पँचतन्त्र की पशु- पक्षियों वाली शैली से भी कम खतरनाक तरीके अपनी बातें कहने के हमारे पास हैं।

हमें खुसर- पुसर करने की जरूरत नहीं है। जिनके पता चल जाने का डर हो ऐसी गुप्त बातें करने की हमें आवश्यकता नहीं है।

"अभी नहीं तो कभी नहीं" की बातें बेगानी हैं, हमारे लिये पराई हैं। रोज खटने जाना होता है। अपनी बात कहने की हमें कोई हड़बड़ी नहीं होती। यूँ भी आमतौर पर हम टुकड़ों में बातें करते हैं। छोटे- छोटे टुकड़ों में हमारी बातों के सम्मुख दल्ले- चमचे- चुगलखोर- गुप्तचर- मॉनिटर- सुपरवाइजर नाकारा हैं। जैसे कैमरे हमारे हाथों से बोलने पर पाबन्दी नहीं लगा सकते वैसे ही गुप्त टेपरिकार्डर भी टुकड़ों में हमारी बातों के लिये कोई खास समस्या नहीं हैं। दरअसल, टुकड़ों में हमारी बातें और हाथों से निकलते हमारे महीन सुर साहबों को साँप- छुछुन्दर की स्थिति में खड़ा कर देते हैं: चींटी पकड़ने के लिये हाथी लाना महँगा तो है ही, जगहँसाई ऊपर से लिये है।

गड़बड़ तब होती है जब हम सिर- माथों पर बैठने वालों की वाक्‌युद्ध शैली के चक्कर में पड़ते हैं। बातचीत में चित्त करना, अपनी बात को अभी और यहीं मनवाने के तरीके साहबों को रास आते हैं। आपसी बातचीत में जब हम चित्त- पट्ट के तरीके अपनाते हैं तब चमचों- चुगलखोरों- गुप्तचरों के शिकार बनते हैं, मैनेजमेन्ट की निगाह में टारगेट बनते हैं।

बत्तीस हजार अस्त्र- शस्त्र- शास्त्रों के घेरों में भी टुकड़ों में बातें करना सहज है, सरल है।

और जाहिर है कि लम्बी वार्ताओं, विस्तृत चर्चाओं के लिये स्थान, लोग और विषय- वस्तु हमें अपनी सुविधा व पसन्द अनुसार चुनने चाहियें।

असर के पैमाने

खरीद- बिक्री में हेरा- फेरी से हम सब परिचित हैं। प्रभाव मापने में भी खूब फरेब इस्तेमाल होते हैं।

सिर- माथों पर बैठने वालों द्वारा प्रचारित नापने के पैमाने हैं: प्रभाव प्रत्यक्ष और तत्काल दिखाई दे। फिल्मों में एक से बढ़ कर दूसरी घटना- दर- घटना और हीरो- हीरोइन के उनमें उलझने व उनसे निपटने के जरिये असर के तत्काल परिणाम वाले फरेबी नाप- तोल को खूब प्रचारित- प्रसारित किया जाता है।

नेताओं के जल्से- जलूस- भाषणबाजी- हड़ताल से प्रभाव मापने के फरेबी पैमानों से हमारा सीधा- सीधा वास्ता पड़ता है। यह ठोकर पर ठोकर के अनुभव हैं कि व्यवहार में हम इन से पिण्ड छुड़ाने की राह पर बढ रहे हैं।

जरूरत है हमें असर नापने के अलग पैमाने की। हमारे पैमाने में एक बात तो यह आवश्यक लगती है कि वह अप्रत्यक्ष प्रभाव और अधिक समय में महसूस होने वाले प्रभाव को नापने की क्षमता लिये हो। ऐसा पैमाना हमारे रोजमर्रा के अनगिनत व अदृश्य कदमों के बहुत भारी असर की हकीकत को सामने लायेगा और "कुछ नहीं हो रहा" के गुमराह करते सतही- छिछले प्रचार को ठिकाने लगाने में सहायक होगा।

मजदूरों द्वारा बन्द मुँह से बोलने, हाथों से बोलने, टुकड़ों में बोलने से पड़ते बहुत भारी प्रभाव ने सिर- माथों पर बैठों के विद्वानों- ज्ञानियों- पण्डितों को बेहद चिन्तित कर रखा है। तन्त्र की जकड़ को प्रतिनिधि- मॉनिटर- टीम लीडर के नाम से प्रत्येक आठ- दस तक पहुँचाने और मानव संसाधन विकास विभागों के जरिये मजदूरों को स्वयं की दुर्गत बढाने के लिये प्रेरित करने की कसरतें जारी हैं।

और वर्तमान के फेर

हमारे हर पल पर कब्जे की फिराक में हैं सिर- माथों पर बैठे। ऐसे में जब हम अगल- बगल तक की हकीकत से आँखें फेर कर "मेरा बेटा ऐसा नहीं होगा — मेरा पति अलग होगा — मेरी नौकरी में जलालत नहीं है / नहीं होगी — मेरे जीवन में यह नहीं होगा — ...." की डगर पर बढते हैं तब हम अपनी दुर्गत की राह को ही पुख्ता करते हैं। निन्यानवे के फेर में स्वयं को जुये में जोत कर सुनहरे सपने बुनना नादानी के सिवा और क्या है?

बातें व्यक्ति- विशेष की इच्छाओं की नहीं हैं। बल्कि, यह वर्तमान व्यवस्था है जो तिरस्कार- अपमान- दमन- शोषण की जननी है। वर्तमान से हम अलग, अछूते नहीं रह सकते। इसलिये इसे बदलने की जरूरत है ......

होड़ नहीं, तालमेल
तौहीन नहीं, आदर

लोगों के सिरों पर चढ़ने को जहाँ सफलता माना जाता है वह कोई अच्छी समाज व्यवस्था नहीं है।

प्रतियोगिता और अपमान लिये वर्तमान व्यवस्था चिरस्थाई नहीं है। बल्कि, यह जर्जर हो गई है और डगमगा रही है।

बही- खाते के हिसाब वाले अपने- अपने हितों के संकुचित दायरों की वर्तमान में भरमार है। तेरी- मेरी बातों, हमारी बातों को वर्तमान द्वारा थोपे यान्त्रिक हितों के संकरेपन से बाहर निकलने की जरूरत है। तभी हम गौण- क्षुद्र- तुच्छ लोग नई और अद्भुत समाज रचना कर सकेंगे। तथास्तु- आमीन! ■

अनुभव-दर-अनुभव... (पेज दो का शेष)

मैनेजमेन्ट के आश्वासन पर भरोसा करना फिजूल ही नहीं बल्कि नुकसानदायक भी है। अपनी- अपनी के चक्कर में हम सब की समस्यायें बढती हैं जबकि एक- दूसरे की मदद से सब की परेशानियाँ घटती हैं।"

हिन्दुस्तान वायर्स मजदूर : "नौकरी से निकालने के लिये बहाने ढूँढ रही मैनेजमेन्ट भेड़िया और मेमना वाली कहानी को भी मात कर रही है। बरसों से काम कर रहे मजदूरों को अचानक पत्र दिये जिनमें लिखा है, 'आप द्वारा दर्ज कराई गयी आपकी जन्म तिथि सन्देहजनक है एवं आपकी वास्तविक उम्र उससे कहीं ज्यादा है।' और, धूर्त शिरोमणी श्रेणी की मैनेजमेन्ट ने प्रमाण- पत्र के लिये दस दिन का स्पेशल अवकाश दिया है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए [illegible] दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।